आदर्श महाकवि, भावलिंगी संत प.पू. श्रमणाचार्य

श्री विमर्शसागर जी महाराज की बुंदेली पूजन

पाद प्रक्षालन

चलत ईर्या समिति से गुरुवर, देख देख पग धरवें।
स्वर्ण कलश में जल भरके हम, पग प्रक्षालन करवें।।
गुरु त्याग पनहइयाँ ककरन पे भी, चलत है पईयाँ पईयाँ।
सारे जग में ढूढों हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

स्थापना

भाव सजावें भगत बुलावें, हिरदय में पधरावें।
गुरुवर अइयो, भूल न जइयो, हम सब टेर लगावें।।
अष्ट द्रव्य को थाल सजाये, द्वार खड़े सब गुइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउ नइयाँ।।

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर जी यतिवरेभ्यो अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

द्रव्य समर्पण

आये पूजन करन, आये पूजन करन, पूजा हमाई स्वीकारौ।
लम्बो रस्सा लये बाल्टी, कुइयाँ नेंगर गये हम।।
फींचो छन्ना, सुखा घाम में, पानी छान भरे हम।।
ऊ पानी से गुरु खों पूजें, धन्य भई वा कुइयाँ।।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन

चंदन की मुठिया से सिलिया पे घिस लई जा केशर।
रजत रकेवी में भरके हम, चले आये गुरु के दर।।
ऊ शुद्ध सुगंधित केशर से हम पूजें गुरु की पइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रूँ प.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

धान दरी अपने हाथन से, सूपा से फटकारी।
लैके चाँउर छाने वीने, धोउन गये अटारी।।
उन अक्षत चाँउर से पूजें, गाके ता ता थइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अक्षय पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

गेंदा बेला जुही चमेली, बारी सें लै आये।
महकत हैं जे ऐसे भइया, सबई के मन ह्वायें।।
उन फूलन सें गुरु खों पूजें, गुरवर काम नसइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

लई लकरियाँ सूखीं सूखीं, चूल्हो फूंक जराओ।
धरी करहिया, बरा थड़ूला, सद् नेवज बनबाओ।।
गुरु पूजन की परी हुलतुली, नई बन पाई सिमड़्याँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

लई कपास पहला की बाती, घी में खीब डुबाई।
गुरु पूजन खों दिया मैं घरकें, जगमग लौ प्रगटाई।।
घी निकलो हतो दूध से जिनके, धन्य भई वे गइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अगर तगर आदिक से मिश्रित, धूप दशांगी लेवें।
गुरु पूजन खों कुण्ड जराकें, आओ धूप हम खेवें।।
महक उठी हैं दशों दिशायें, नाचें लोग लुगइयाँ।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

डरपक गदरीं बिहीं पपीता, शाहें लेदी लावें।
गुरु गुण के फल पावे खों, हम फल की भेंट चढ़ावें।।
गुरु गैल सांची है बांकी, सब है भूल भुलइयाँ।।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउँ नइयाँ।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

आठों दरब मिलावें गावें, छंद अरघ को सब जन।
आओ मिलके अर्घ चढइये, करिये गुरु की पूजन।।
ढुलक नगडियां, बजा बजाकें, गावें आज बधइयां।
सारे जग में ढूढो हमने, ऐसे गुरु कउ नइयां।। आये पूजन....

ॐ ह्रीं पू.पू. आचार्यश्री विमर्शसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीतिस्वाहा।

जयमाला

नोनों लगत गुरु को दोर, निहारत सब जन गुरु की ओर
ज्ञान की धार बहाई है....2.....2.....
आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनती सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो।।2।।
गणाचार्य के शिष्य गुरु जी, जो वंदन स्वीकारों।

हमखों भी अपनी वाणी से, भव से पार उतारो।।
लबरा खाग रहे हैं जग में, भवसागर में डारत।
सांची सांची बोलन बारे, सबखों तुमई उबारत।।
नाम है सुंदर गुरु विमर्श, सुनत है जो कोउ पाउत हर्ष।

वीर की मुद्रा पाई है....

आठें दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि बिनती सुन लइयो, तनक सौ सुन लईयो।
वैरी बनो करम जो हमरो, भव भव में हतो पेरत।
कहूं गैल न मिली चैन की, हारे हेरत हेरत।।
बड़ो पुण्य औसर जो आओ, भावलिंगि गुरु पाये।
हेरत हेरत बहु दिन बीते, अब दर्शन मिल पाये।।
कि अब ना संग छोरियो नाथ, चरण में रख दओ हमने माथ।

तुम्हई से आस लगाई है.....

आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनीत सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो।
बुंदेली में पूजा लिखके, हमने पुण्य बढाओ।
आठ दरव से तुम्हें पूजकें, अपनो भाग्य जगाओ।।
वैरागी निर्ग्रंथ तपोधन, तुम्हई हौ सुख की छइयां।
सारे जग में ढूंढो हमने, तुमसो गुरु कोउ नइयां।
तपोधन तुम्हीं हो निर्ग्रंथ, धारलओ तीर्थंकर को पंथ।

वीतरागी छवि भाई है....

आठों दरव सजाके हमने, पूजा रचाई है।
कि विनती सुन लइयो, तनक तौ सुन लइयो

ॐ ह्रूँ श्रमणाचार्यश्री विमर्शसागर यतिवरेभ्यो जयमाला सहित पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शब्द श्रृंखला बुंदेली की, देउत जो 'संकेत'।
विनत रहौ गुरु चरण में, जागै आत्म 'विवेक'।।
पुष्प समर्पित गुरु चरणन में, जो चढ़वें उच्च चढ़इयाँ।
सारे जग में ढूढो हमनें, ऐसे गुरु कउं नइयां।

।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

सृजनकार
पं. संकेत जैन 'विवेक'
देवेन्द्रनगर, पन्ना, म.प्र.